मेरे जीवन का ऐतिहासिक दिन

(मौलाना अली मियाँ का इन्दौर हाई कोर्ट
बार एसोसिएशन से सम्बोधन)

मौलाना अलीं मियाँ (रह0)

पयामे इन्सानियत फ़ोरम

पोस्ट बॉक्स नं0 – 93, लखनऊ।

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

देश की बिगड़ती स्थिति से चिन्तित होकर विश्व के महान विचारक मौलाना अली मियाँ (रह0) ने वर्ष 1977 में देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा की जो बड़ी सफल रही। देशवासियों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया। मौलाना का यह ऐतिहासिक भाषण है जो आपने इन्दौर हाईकोर्ट के भव्य भवन के कम्पाउन्ड में दिया था। इसमें बड़ी संख्या में अधिवक्ता, न्यायविद आदि उपस्थित थे, जिसकी अध्यक्षता हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री एस0 डी0 सानेधी एडवोकेट ने की, जिनकी गणना मध्य प्रदेश में प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण विधिवेत्ताओं में होती है। इस भाषण का अनुवाद श्री हबीबुल्लाह आज़मी साहब, सहायक सम्पादक हिन्दी मासिक "सच्चा राही" द्वारा किया गया है इस भाषण से देश में बसने वाले सभी नागरिक लाभ उठायेंगे। हज़रत मौलाना (रह0) के निधन के बाद भी इस संदेश की मांग बढ़ती जा रही है। देश के नागरिकों से अनुरोध है कि इन्सानियत के पाठ को जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास करें, ज़िससे देश में इन्सानियत (मानवता) का बोल बाला हो सके।

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

मेरे जीवन का ऐतिहासिक दिन

सज्जनों !

मेरे विद्वान और सम्मानित दोस्तो ! आज का दिन मेरे जीवन में ऐतिहासिक दिन है, इसलिए कि मैं अपनी ज़िन्दगी में दो बार कोर्ट गया हूँ। एक बार तो द्विभाषी (INTERPRETER) की हैसियत से। बहुत ज़माना हुआ हमारे शहर लखनऊ में एक साहब हमारे COLLEAGUE थे, उन पर किसी ऐसे बाइलाज (BYLAWS) में जो म्युनिस्पिलटी के होते हैं, केस क़ाइम हो गया। वह अरबी बोलते थे, और कोई ज़बान नहीं जानते थे तो मैं अनुवादक (TRANSLATOR) की हैसियत से कोर्ट गया था। लेकिन उस दिन मुक़दमा नहीं हुआ और ख़ारिज हो गया और मैं पेश न हो सका। दूसरी बार अपनी वाल्दा की जायदाद

www.abulhasanalinadwi.org

की रजिस्ट्री के सिलसिले में कोर्ट गया था और आज कोर्ट में यह तीसरी हाज़िरी मेरे लिए (HISTORICAL) है। मैं मुद्दई की हैसियत से नहीं आया हूँ। इसमें तो बड़ी ज़हमत (कष्ट) होती है। मैं आया हूँ अच्छे, बुद्धिजीवी, सम्मानित शहरियों के चुनिन्दा जनसमुदाय से मिलने और उनसे बात करने।

लीडरशिप क़ानूनदां तबक़े के हाथ में

आप यह जानते हैं कि हिन्दुस्तान की रहनुमाई (नेतृत्व) क़ानून जानने वाले तबक़े (वर्ग) की और आज भी हिन्दुस्तान की लीडरशीप क़ानूनदानों (LAWYERS) के हाथ में है। महात्मा गांधी से लेकर जवाहरलाल नेहरू तक सर मुहम्मद अली जिनाह, सर तेजबहादुर सपरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, बैरिस्टर आसिफ अली, हिन्दुओं और मुसलमानों के अक्सर लीडर क़ानूनदां तबक़े से सम्बन्ध रखते हैं। हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी इसी तबक़े ने लड़ी। अंग्रेज़ जैसी क़ानूनी और LEGAL दिमाग़ रखने वाली क़ौम का मुक़ाबला LEGAL तरीक़े से करना चाहिये था। अंग्रेज़ अगर कोई ग़लत काम करना चाहता है तो उसे भी क़ानूनी और LEGAL तरीक़े पर करना चाहेगा, और ठीक काम करता है तो वह भी दस्तूरी

www.abulhasanalinadwi.org

(वैधानिक) और क़ानूनी अन्दाज़ में करता है। उसने अपने बड़े–बड़े मुहसिनों (उपकारियों) मसलन लार्ड कलायू आदि पर, जिन्होंने ब्रिटिश इम्पायर की बुनियाद (FOUNDATION) रखा था। मुक़दमा चलाया और ब्रिटिश पॉर्लियामेन्ट में बरकले का भाषण आपको याद होगा। हिन्दुस्तान में उनके ख़िलाफ लड़ाई भी वही लोग कर सकते थे जो क़ानून के माहिर थे और क़ानून का जवाब क़ानून से दे सकते थे।

मौत और ज़िन्दगी की जंग

इसलिए आप हज़रात इस समय भी देश में बहुत अहम रोल (ROLE) अदा कर सकते हैं। इस समय हमारा देश एक ख़ास स्टेज (STAGE) पर पहुँच गया है। एक बहुत बड़ी (CRISIS) को (FACE) कर रहा है। यह क्राइसिस क़ानून का नहीं, बल्कि इंसानियत (HUMANITY) का है। यह MORAL CRISIS और ETHICAL CRISIS (चरित्र और आचरण का क्राइसिस) है। इस समय देश लड़ाई के एक दूसरे मैदान में दाख़िल हो रहा है। यह लड़ाई ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई है। इस लड़ाई में आप हज़रात की रहनुमाई (पथप्रदर्शन) की ज़रूरत है।

www.abulhasanalinadwi.org

मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ। मेरा अध्ययन यह कहता है कि तहज़ीब (CIVILIZATION) और सोसाइटी पर दो युग आते हैं। एक उस समय जब सोसाइटी का आला दिमाग़, बुद्धिमान और क़ाबिल तबक़ा (INTELLIGENSIA) अच्छे रूख़ा पर चलता है, CONSTRUCTIVE (रचनात्मक) बन जाता है तो उस समय तहज़ीब (सभ्यता) की बाहर आ जाती है। सोसाइटी अपनी चरम सीमा (CLIMAX) पर पहुँच जाती है। फिर एक युग वह आता है जब यह ज़िहानत (बुद्धिमानी) DESTRUCTIVE (तबाहकुन) बन जाती है। वह पेशावराना (PROFESSIONAL) बन जाती है और उस को इस से बहस नहीं होती कि सोसाइटी डुबेगी या पार उतरेगी। हमारा समाज तबाह होगा या पनपेगा। उन्हें बस अपनी फ़ीस से मतलब होता है। ख़ुशकिस्मती जब इंसान और इंसानी सोसाइटी को नसीब होती है तो GENIUS (असाधारण बुद्धि वाले) लोग जो बुद्धिजीवी होते हैं और आम लोगों के स्तर से बुलन्द होते हैं, वह सोसाइटी को बचाने की फ़िक्र करते हैं। वह अपनी सारी होशियारी, सारा TALENT (ज़िहानत), सारा फ़न, सारी साइंस, अपनी पूरी SKILL अपना तमाम EXPERIMENT (प्रयोग) जो कुछ उनके पास होता है सब कुछ दांव पर लगाकर सोसाइटी को तबाही से बचाते हैं और इसकी परवाह नहीं करते कि

www.abulhasanalinadwi.org

उनका अंजाम क्या होगा ? पैसा मिलेगा या नहीं मिलेगा, हमारा पेशा कामयाब रहेगा या नाकाम ? वह केवल यह देखते हैं कि किसी तरह समाज बच जाये, सोसाइटी डूबने न पाये।

सब डूब जायेंगे

इस समय हिन्दुस्तान को आप की ज़िहानत, आपकी कानूनी जानकारी, आपकी मेहनत, आपकी शराफ़त की बेहद ज़रूरत है। यूं समझिये कि एक कश्ती एक नवका तूफ़ान में फंस गई है, ख़ौफ़नाक लहरें मुंह खोले हुए उस की तरफ़ बढ़ रही हैं। इस नवका में कुछ कमज़ोर लोग सवार हैं। नाव डूबने के बिलकुल क़रीब है। ऐसे समय में कोई ऐसा मल्लाह ऐसा खेवनहार आजाये जो इस कश्ती को पार लगा दे तो वह बहुत बड़ा उपकारी होगा। आज हमारा देश जिस पर हम कश्ती की तरह सवार हैं, उसमें सूराख़ किया जा रहा है। अगर यह कश्ती डूब गई तो अच्छे और बुरे, पढ़े–लिखे और अनपढ़, निर्धन और मालदार, छोटे और बड़े, बच्चे और जवान सब डूब जायेंगे। हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़श्ती की मिसाल देकर यह बात फ़रमाई है कि अगर नीचे के भाग वाले इस में छेद करें तो ऊपर (UPPER CLASS) के लोगों को

www.abulhasanalinadwi.org

तमाशाई नहीं बनना चाहिये। इसलिए कि कश्ती डूबी तो वह भी नहीं बचेंगे।

सूराख़ एक ही तरह का नहीं होता। कोई छोटा होता है, कोई बड़ा, कोई ख़ूबसूरत, कोई भद्दा। कोई फाउड़ा मार कर सूराख़ करता है। हमारी सोसाइटी CORRUPT (भ्रष्ट) हो रही है। पूरी सोसाइटी में विभिन्न नश्तरों से सूराख़ किया जा रहा है।

अब आप इंसाफ़ कीजिये। मैं इंसाफ़ का नाम इस हाईकोर्ट में लेता हूँ और यहाँ इंसाफ़ की दुहाई देता हूँ।

आपके कामनसेंस (COMMONSENSE) को अपील करता हूँ। बताइये नीचे सूराख़ हो गया तो क्या हम बचेंगे ? आज यही हो रहा है। हिन्दुस्तान से बाहर भी तमाम दुनिया में यही हो रहा है। उन्नीस, बीस का फ़र्क है। कोई देश यह दावा नहीं कर सकता कि हमारी सोसाइटी आइडियल सोसाइटी है। पूरी इंसानी सोसाइटी करप्ट हो रही है। उस में बग़ावत है, बेचैनी है, CONFUSION है, FRUSTRATION है। सब परेशान हैं। कोई संतुष्ट नहीं, सुखी नहीं। इस समय तमाम संसार का और तमाम वर्गों का यही हाल है। ऊपर के वर्ग वाले यह नहीं सोचते कि हमारी क़िस्मत नीचे के वर्गवालों से जुड़ी है।

www.abulhasanalinadwi.org

आप मैदान में निकल आयें

इंसान और जानवरों में फर्क है। जानवर रोज़ाना मारे जाते हैं, कोई बग़ावत नहीं होती। लेकिन एक इंसान मारा जाए तो खलबली मच जाती है। एक आदमी किसी जुर्म में गिरफ़्तार होता है तो सारी सोसाइटी में चर्चा होती है। हमारे स्वभाव में हमारे नेचर (NATURE) में एक दूसरे का एहसास एक दूसरे से संबंध का जज़्बा कुदरत ने रखा है। एहसास की यह दौलत इसलिए दी गई है कि हम इस से सही काम लें। अपने देश को और पूरे इंसानी समाज को तबाही से बचाएं। एक दूसरे के दुख–दर्द में काम आयें।

आप हज़रात इस बात की सबसे अधिक योग्यता रखते हैं। मुल्क की नाव जो मंझधार में घिरकर डांवा डोल हो रही है। उस को बचाने के लिए अपना कुछ समय लगायें। पेशे से हरज करें, अपने पैसे को खर्च करें, अपनी सेवाओं को पेश करें। आप मैदान में निकल आयें। देश के कोने–कोने में पहुँचें और कहें कि यह दुराचरण, इंसानी दुश्मनी, कमज़ोरों की हत्या, बेईमानी, मुल्क दुश्मनी नहीं होना चाहिये। मैं आप से अपील करता हूँ कि आप अपनी ज़िहानत (बुद्धिमानी) और सलाहियत (क्षमता) का रूख़ कुछ इस तरफ भी फेरें।

www.abulhasanalinadwi.org

जंगे–आज़ादी में वकील साहिबान पहली पंक्ति में थे। आज भी देश को बचाने और संवारने और उसकी निःस्वार्थ सेवा के लिए उन्हें आगे बढ़ना चाहिये।

आपका पेशा एक सम्मानजनक पेशा कहलाता है। मुझे मालूम है कि पहले ज़माने में अगर किसी शहर में कोई अच्छा बैरिस्टर, एडवोकेट आता था तो सारे शहर में उसकी इज़्ज़त होती थी। इसलिए कि उन्होंने अपनी क़ाबिलियत, योग्यता और सेवा का सिक्का देश में जमा दिया था।

मैं अपना सम्मान समझता हूँ कि आज आपके तबक़े से, सोसाइटी के दिमाग़ से मुझे कुछ कहने का अवसर मिल रहा है। मैं आप से केवल यह चाहता हूँ कि आप इंसानियत के सम्मान, आदमी की इज़्ज़त के प्रचार के लिए मैदान में आयें।

एक दूसरे को समझने की कोशिश करें

ख़ुदा के नज़दीक इंसान बड़ा प्यार है। आदमी का आदमी होना यह बहुत बड़ी क्वालीफ़िकेशन है। इसके अतिरिक्त उसे और किसी क्वालीफ़िकेशन की ज़रूरत नहीं। आदमी जिस समय माँ के पेट से पैदा हुआ उसी

www.abulhasanalinadwi.org

समय उसके सिर पर दुनिया की सलतन्त के उत्तराधिकारी का ताज रख दिया गया। हम इंसान की हर चीज़ पर प्राथमिकता दें। हम एक दूसरे की कद्र करें। एक दूसरे को समझने की कोशिश करें। एक दूसरे के लिट्रेचर, कल्चर, सिस्टम, सिविलाइज़ेशन (सभ्यता), रिलिजन (धर्म) को ईमानदारी के साथ सीखने की कोशिश करें।

हज़ार वर्ष से हिन्दू–मुस्लिम भाई इस देश में रहते हैं। पड़ोसी हैं। दीवार से दीवार मिली है लेकिन यह अजीब बात है कि एक दूसरे की प्रारम्भिक बातें, बुनियादी चीज़ें भी नहीं जानते।

इसकी एक मिसाल देता हूँ। एक बार ट्रेन में चंद साथियों के साथ सफ़र (यात्रा) कर रहा था। नमाज़ का समय हुआ। हम ने जमआत से नमाज़ पढ़ी। जब हम नमाज़ मं रूकूअ और सज़दे में जाते हैं तो अल्लाहु अक़बर (अल्लाह महान है) कहते हैं। हमारे साथ सफ़र करने वाले एक हिन्दू भाई ने, जो पढ़े लिखे अफ़सर थे, नमाज़ के बाद पूछा – "मौलवी साहब ! आप जब नमाज़ पढ़ते थे तो क्या अक़बर बादशाह को याद करते थे ?"

देश में हर लगह मस्जिदें हैं। हर समय अज़ान, नमाज़ में अल्लाहु अक़बर की आवाज़ आती होगी, लेकिन उन्होंने कभी ख़्याल नहीं किया कि पूछें "अल्लाहु अक़बर"

का अर्थ क्या है ? उसे क्यों बोला जाता है ? इसी तरह हमारे हिन्दू भाई की बहुत सी बातें होंगी जिन की जानकारी हमें होनी चाहिए। बिना किसी हीन–भाव के यह जानकारियाँ हासिल की जा सकती है।

हमारे इस सफ़र में इस मीटिंग का बहुत महत्व है कि हमें मौक़ा मिला कि अपने विचार और एहसास (FEELINGS) को आप जैसे पढ़े–लिखे लोगों के सामने पेश कर सका। खुदा करे कि और शहरों में भी ऐसे अवसर बराबर मिलें, जिससे हम एक दूसरे को समझें। हमदर्दी (सहानुभूति) मोहब्बत और सम्बन्ध पैदा हो। मिलने जुलने से बहुत सी बातें मालूम होती हैं। इसमें बड़े फ़ायदे हैं। हमारे बीच सोशल सम्बन्ध होने चाहियें। मुझे यह मालूम होना चाहिये कि आप क्या सोचते हैं? आप का धर्म क्या कहता है ? आप भी मेरे बारे में जानें। मेरे धर्म के बारे में जानकारी हासिल करें।

यह अचम्भे की बात है कि विदेशों में हिन्दुस्तानी बड़े प्रेम से मिलते हैं, परन्तु अपने वतन में नहीं मिलते।

मैं जब अमरीका में था और मेरी आँख का आपरेशन हुआ था तो उस हास्पिटल के एक हिन्दू डाक्टर मेरा हिन्दुस्तानी नाम देख कर मिलने आये और रोज़ाना बड़ी मोहब्बत से मिलते रहे। यह केवल वतन का रिश्ता था

www.abulhasanalinadwi.org

जो परदेस में प्रेम की सौग़ात बन गया। यह बात तो वतन में और अधिक होना चाहिये। यह बहुत अनुचित बात है कि आदमी दूसरे आदमी से डरे या उसे सन्देह की दृष्टि से देखे।

इस काम में आप हज़रात की कोशिश की बहुत ज़रूरत है। आप जो समय कोर्ट में देते हैं, अपने मुअक्किलों को देते हैं उस में थोड़ा सा समय ग़लत फ़हमियों (भ्रम) को दूर करने और गुडविल (GOOD WILL) का माहौल पैदा करने, इंसानियत का सम्मान दिलों में बैठाने के लिए दें। इंसान–इंसान है, चाहे वह किसी भी धर्म व समुदाय का हो। वह हमारा भाई है उससे हमेशा प्रेम करना चाहिये। इस से सारी मुसीबत, सारे दुख–दर्द ख़त्म हो जायेंगे।

हम शुक्रगुज़ार हैं कि आप ने हमें बुलाकर विश्वास का इज़हार (अभिव्यक्ति) किया, प्रेम का प्रदर्शन किया और मिलकर बैठने का अवसर दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

अखिल भारतीय मानवता सन्देश अभियान

२८,२९ और ३० दिसम्बर सन् १९७४ ई०, को इलाहाबाद से एक नये अनुभव का शुभारम्भ हुआ। देश की दिन प्रति–दिन बिगड़ती हुई परिस्थिति और यहाँ मानवता तथा नैतिक मान्यताओं के पतन से प्रभावित होकर नईम मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह० (अली मियाँ) ने धर्म तथा सम्प्रदाय में भेद–भाव किये बिना समाज के प्रत्येक वर्ग से सम्पर्क स्थापित करने तथा प्रवचनों द्वारा मानवोत्थान के लिए एक संघर्ष का आरम्भ किया। ऐसे पवित्र महत्वूपर्ण समयानुकूल एवं शुभ कार्य का प्रारम्भ इलाहाबाद नगर से किया गया : जिसके नामकरण का उल्लेख मौलाना के शब्दों में इस प्रकार वर्णित है :–

"इलाहाबाद से हमने इस कार्य का शुभारम्भ किया है क्योंकि इसका नाम ही 'इलाहाबाद' अर्थात् (ईश्वर की नगरी) है। अतः यहीं से ईश्वर भक्ति का आन्दोलन एवं मानवता के उत्थान का आहवान होना चाहिए। खुदा के बन्दों का सत्कार करने, मानवता को नया जीवन प्रदान करने तथा इन्सानों को मानवता एवं नैतिकता का भूला हुआ पाठ स्मरण कराने का कार्य वास्तव में इसी नगर से होना चाहिए था, जो ईश्वर के नाम से बसा हुआ है।"

मौलाना के इसी आव्हान को समस्त देश में मानवता तथा नैतिकता के आन्दोलन एवं संघर्ष का रूप देने के लिए लखनऊ में, "अखिल भारतीय मानवता सन्देश अभियान" की स्थापना हुई है। यह कोई नयी संस्था, राजनीतिक दल अथवा पार्टी नहीं है, बल्कि यह एक नयी एवं अपरिचित पुकार लगाने

www.abulhasanalinadwi.org

वालों का सार्वजनिक प्लेटफॉर्म है।

यदि आप इस आव्हान एवं आन्दोलन को देश के लिए आवश्यक समझते हों, तो सत्यता एवं मानवता के इस नवीन काफिले में सम्मिलित हो जाइये।

अभिप्राय तथा उद्देश्य

१. केवल मानव सम्बन्ध तथा भारतीय नाते से देश में भाई चारे का वातावरण बनाना, अत्याचार, निराज, अराजकता तथा दुराचार का समाधान, लोक सम्बन्ध अभियान एवं सभाएं और सेमिनार करना।

२. लाभकारी तथा नैतिक साहित्य का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन, लोक सेवा द्वारा रूठे तथा परस्पर लड़े हुओं का जीवन के वास्तविक एवं उद्देश्य का ज्ञान कराना।

३. समाज से घूस, स्वार्थ परायणता, भ्रष्टाचार, संचयकारिता, साम्प्रदायिकता तथा आर्थिक शोषण को दूर करना और निलज्जा एवं वस्त्रहीनता के विरुद्ध प्रयास करना।

४. अनुचित तथा अत्याचार पूर्ण रीतियों एवं प्रथाओं की समाप्ति की चेष्टा करना।

५. देश के उत्पीड़ित, पिछड़े, निर्धन एवं व्याकुल जनों की, धर्म आदि के भेद–भाव के बिना, यथा सम्भव सहायता करना।

६. नवयुवकों विशेषतया विद्यार्थियों में गम्भीरता, योग्यता तथा समाज सेवा का उल्लास उत्पन्न करना ताकि देश को नवयुवकों की पथ भ्रष्टता की हानि से बचाया जा सके।

७. अपने प्रभाव क्षेत्र, मुहल्ला, बस्ती, नगर तथा पूरे देश में भ्रातृ–भाव का वातावरण पैदा करने की सम्भव चेष्टा

www.abulhasanalinadwi.org

करना।

कार्य पद्धति

१. पयामे इन्सानियत (मानवी आव्हान) के नाम से एक हिन्दी तथा उर्दू समाचार पत्र का संचालन।

२. शपथ–पत्र भरना तथा जीवन में परिवर्तन की चेष्टा।

३. हर नगर तथा जिले में एक केन्द्र की स्थापना जहां रचनात्मक साहित्य तथा समाचार पत्र के प्रसारण का प्रबन्ध हो एवं सभाएं, मीटिंगे और सेमिनार किऐ जाएँ।

४. धर्म आदि के भेद भाव से रहित होकर मानव के दुःख – पीड़ा में सहायता, जैसे कोई घटना घट जाए, उसका सम्बन्ध किसी से भी हो "पयामे इन्सानियत फोरम" प्रेमियों का प्रथम कर्तव्य होगा कि वे वहां पहुंच कर अपनी स्वार्थहीन सेवाएं प्रस्तुत करें तथा संकट को दूर करने में क्रियात्मक भाग लें।

५. शादी विवाह की अत्याचार पूर्ण प्रथाओं के विरुद्ध वातावरण पैदा करने की चेष्टा करें जिन्होंने जीवन का कटु तथा आनन्द को विपत्ति बना दिया है।

६. प्रत्येक कार्यकर्ता सप्ताह में कुछ समय वैयक्तिक मिलन द्वारा अपने पास पड़ोस में मानव प्रेम तथा सहानुभूति का वातावरण पैदा करने की चेष्टा करेगा।

७. साप्ताहिक अथवा पाक्षिक बैठक जिसमें पयामे इंसानियत के कार्यकर्ता अपने प्रगति विवरण तथा कार्यपद्धति का सुझाव वतान्त प्रस्तुत करेंगे। इस बैठक में कोई लेख अथवा निबन्ध पढ़ा जायेगा जो मंडल (फोरम) के उद्देश्य तथा अभिप्राय में सहयोगी एवं साथियों के प्रशिक्षण में लाभदायक हो।

www.abulhasanalinadwi.org